

प्रधानमंत्री कार्यालय



एनपीडीआरआर और सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार-2023 की तीसरी बैठक में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 10 MAR 2023 8:18PM by PIB Delhi

सबसे पहले मैं Disaster resilience और disaster management से जुड़े सभी साथियों को बधाई देता हूँ। क्योंकि काम ऐसा है कि आप कई बार अपनी जान जोखिम में डालकर भी औरों की जिंदगी बचाने के लिए बहुत ही शानदार काम करते हैं। हाल में तुर्किए और सीरिया में भारतीय दल के प्रयासों को पूरी दुनिया ने सराहा है और ये बात हर भारतीय के लिए गौरव का विषय है। राहत और बचाव से जुड़े ह्यूमन रिसोर्स और टेक्नॉलॉजिकल कैपेसिटी को भारत ने जिस तरह बढ़ाया है, उससे देश में भी अलग-अलग आपदा के समय बहुत सारे लोगों के जीवन बचाने में मदद मिली है। डिज़ास्टर मैनेजमेंट से जुड़ा सिस्टम सशक्त हो, इसके लिए प्रोत्साहन मिले, और देश भर में एक तंदुरुस्त स्पर्धा का भी वातावरण बने इस काम के लिए और इसलिए एक विशेष पुरस्कार की घोषणा भी की गई है। आज यहां दो संस्थानों को नेताजी सुभाष चंद्र बोस आपदा प्रबंधन पुरस्कार दिया गया है। Odisha State Disaster Management Authority, साइक्लोन से लेकर के सुनामी तक, विभिन्न आपदाओं के दौरान बेहतरीन काम करती रही है। इसी तरह मिजोरम के Lunglei Fire Station ने जंगल में लगी आग को बुझाने के लिए अथक परिश्रम किया, पूरे क्षेत्र को बचाया और आग को फैलने से रोका। मैं इन संस्थानों में काम करने वाले सभी साथियों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

साथियों,

इस सेशन के लिए आपने थीम रखी है- “Building Local Resilience in a Changing Climate”. भारत का इस विषय से परिचय एक प्रकार से पुराना है क्योंकि हमारी पुरानी परंपरा का वो एक अभिन्न अंग भी रहा है। आज भी जब हम अपने कुओं, बावड़ियों, जलाशयों, स्थानीय वास्तुशास्त्र, प्राचीन नगरों को देखते हैं, तो ये एलिमेंट साफ-साफ दिखाई देता है। भारत में आपदा प्रबंधन से जुड़ी व्यवस्था हमेशा लोकल रही है, समाधान लोकल रहे हैं, रणनीति भी लोकल रही है। अब जैसे कच्छ के लोग जिन घरों में रहते हैं उन्हें भुंगा कहते हैं। Mud House होते हैं। हम जानते हैं कि इस सदी की शुरुआत में आए भीषण भूकंप का केंद्र कच्छ था। लेकिन इन भुंगा घरों पर कोई असर ही नहीं हुआ। शायद बड़ी मुश्किल से कहीं एकाध कोने में कोई तकलीफ हुई होगी। निश्चित रूप से इसमें टेक्नॉलॉजी से जुड़े हुए बहुत से सबक है ही है। स्थानीय स्तर पर हाउसिंग या टाउन प्लानिंग के जो मॉडल रहे हैं, उन्हें क्या हम नई टेक्नॉलॉजी के हिसाब से evolve नहीं कर सकते? चाहे लोकल कंस्ट्रक्शन मैटेरियल हो, या फिर कंस्ट्रक्शन टेक्नॉलॉजी, इसको हमें आज की ज़रूरत, आज की टेक्नॉलॉजी से समृद्ध करना समय की मांग है। जब हम Local Resilience के ऐसे उदाहरणों से Future Technology को जोड़ेंगे, तभी Disaster resilience की दिशा में बेहतर कर पाएंगे।

साथियों,

पहले की जीवन शैली बड़ी सहज थी और अनुभव ने हमें सिखाया था कि बहुत ज्यादा बारिश, बाढ़ सूखे, आपदाओं से कैसे निपटा जाए। इसीलिए स्वाभाविक तौर पर, सरकारों ने भी हमारे यहां आपदा राहत को कृषि विभाग से ही जोड़कर के रखा था। भूकंप जैसी गंभीर आपदाएं आती भी थीं तो स्थानीय संसाधनों से ही ऐसी आपदाओं का सामना किया जाता था। अब दुनिया छोटी हो रही है। एक दूसरे के अनुभवों से सीख कर निर्माण की तकनीकों में नए नए प्रयोग भी हो रहे हैं। लेकिन वहीं दूसरी ओर आपदाओं का प्रकोप भी बढ़ रहा है। पुराने जमाने में पूरे गाँव में एक वैद्यराज सबका इलाज करते थे और पूरा गाँव स्वस्थ रहता था। अब हर बीमारी के अलग अलग डॉक्टर होते हैं। इसी प्रकार disaster के लिए भी dynamic व्यवस्था विकसित करनी

होगी। जैसे पिछले सौ साल के आपदा के अध्ययन से zoning की जा सकती है कि बाढ़ का लेवल कहाँ तक हो सकता है और इसीलिए कहाँ तक निर्माण करना है। समय के साथ इन मापदंडों का review भी होना चाहिए, चाहे material की बात हो या व्यवस्थाओं की।

साथियों,

डिजास्टर मैनेजमेंट को मजबूत करने के लिए Recognition और Reform बहुत जरूरी है। Recognition का मतलब, ये समझना है कि आपदा की आशंका कहाँ है और वो भविष्य में वो कैसे घटित हो सकती है? Reform का मतलब है कि हम ऐसा सिस्टम विकसित करें जिससे आपदा की आशंका कम हो जाए। डिजास्टर की आशंका को कम करने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि हम सिस्टम में सुधार करें। समय रहते उसे ज्यादा सक्षम बनाएं और इसके लिए शॉर्टकट अप्रोच के बजाय लॉन्ग टर्म थिंकिंग की जरूरत है। अब हम साइक्लोन की अगर बात करें तो साइक्लोन के समय भारत की स्थिति का अगर हम उसकी तरफ नजर करें तो ध्यान में आता है। एक समय था, जब भारत में साइक्लोन आता था तो सैकड़ों-हजारों लोगों की असमय मृत्यु हो जाती थी। हमने ओडिशा और पश्चिम बंगाल के तटीय इलाकों में ऐसा कई बार होते देखा है। लेकिन समय बदला, रणनीति बदली, तैयारियां और बेहतर हुईं, तो साइक्लोन से निपटने की भारत की क्षमता भी बढ़ गई। अब साइक्लोन आता है तो जान-माल का कम से कम नुकसान होता है। ये सही है कि हम प्राकृतिक आपदा को रोक नहीं सकते, लेकिन हम उस आपदा से नुकसान कम से कम हो, इसके लिए व्यवस्थाएं तो जरूर बना सकते हैं। और इसलिए ये जरूरी है कि reactive होने के बजाय हम proactive हों।

साथियों,

हमारे देश में proactive होने को लेकर पहले क्या स्थिति थी, अब क्या स्थिति है, मैं इसका जिक्र भी आपके सामने करना चाहूंगा। भारत में आजादी के बाद 5 दशक बीत गए थे, आधी शताब्दी बीत गई थी, लेकिन disaster management को लेकर कोई कानून नहीं था। साल 2001 में कच्छ में भूकंप आने के बाद गुजरात पहला ऐसा राज्य था, जिसने Gujarat State Disaster Management Act बनाया। इसी एक्ट के आधार पर साल 2005 में केंद्र सरकार ने भी Disaster Management Act का निर्माण किया। इसके बाद ही भारत में National Disaster Management Authority बनी।

साथियों,

हमें, हमारे स्थानीय निकायों, Urban Local Bodies में Disaster Management Governance को मजबूत करना ही होगा। जब आपदा आए, तभी Urban Local Bodies React करें, इससे बात बनने वाली अब रही नहीं है। हमें planning को institutionalize करना होगा। हमें local planning की समीक्षा करनी होगी। हमें इमारतों के निर्माण के लिए, नए इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स के लिए आपदा प्रबंधन को ध्यान में रखते हुए नई गाइडलाइंस बनानी होंगी। एक तरह से पूरे सिस्टम की overhauling की जरूरत है। इसके लिए हमें दो स्तर पर काम करने की जरूरत है। पहला- यहां जो disaster management से जुड़े एक्सपर्ट्स हैं, उन्हें जनभागीदारी- Local participation पर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए। भारत Local participation से कैसे बड़े लक्ष्य हासिल कर रहा है, ये हम सभी देख रहे हैं। इसलिए जब आपदा प्रबंधन की बात होती है, तो वो भी बिना जनभागीदारी के संभव नहीं है। आपको Local Resilience by Local participation के मंत्र पर चलते हुए ही सफलता मिल सकती है। हमें नागरिकों को भूकंप, साइक्लोन, आग और दूसरी आपदाओं से जुड़े खतरों के प्रति जागरूक करना एक निरंतर प्रक्रिया होनी चाहिए। इससे जुड़े सही नियमों, कायदों और कर्तव्य इन सारे विषयों का बोध निरंतर जगाना जरूरी है। हमें गांव, गली, मोहल्ले के स्तर पर हमारे युवा साथियों की युवा मंडल, सखी मंडल, दूसरे ग्रुप्स को राहत और बचाव की ट्रेनिंग देनी ही पड़ेगी। आपदा मित्रों, NCC-NSS, पूर्व सैनिकों की ताकत उनको भी अगर हम उनको डेटा बैंक बनाकर के उनकी शक्ति का कैसे उपयोग कर सकते हैं, इसके काम्यूनिकेशन की व्यवस्था बनानी होगी। कम्यूनिटी सेंटर्स में फर्स्ट रिस्पॉन्स के लिए जरूरी उपकरणों की व्यवस्था, उनको चलाने की ट्रेनिंग भी बहुत आवश्यक है। और मेरा अनुभव है कभी-कभी डेटा बैंक भी कितना अच्छा काम करती है। मैं जब गुजरात में था, तो हमारे यहां खेड़ा डिस्ट्रिक्ट में एक नदी है। उसमें कभी 5-7 साल में एकाध बार बाढ़ आती थी। एक बार ऐसा हुआ कि एक साल में पांच बार बाढ़ आई लेकिन उस समय ये disaster को लेकर के काफी कुछ गतिविधियां डेवलप हुई थीं। तो हर गांव के मोबाइल फोन अवेलेबल थे। अब उस समय तो कोई लोकल लेंगेज में तो मैसेजिंग की व्यवस्था नहीं थी। लेकिन अंग्रेजी में ही गुजराती में लिखकर के मैसेज करते थे, गांव के लोगों को कि देखिए ऐसी स्थिति है, इतने घंटे के बाद पानी आने की संभावना है। और मुझे बराबर याद है 5 बार बाढ़ आने के बावजूद भी इंसान का तो सवाल नहीं, एक भी पशु नहीं मरा था। कोई व्यक्ति नहीं मरा, पशु नहीं मरा। क्योंकि समय पर कॉम्यूनिकेशन हुआ और इसलिए हम इन व्यवस्थाओं का कैसे उपयोग करते हैं। बचाव और राहत कार्य अगर समय रहते शुरू

होगा, तो जीवन की क्षति को हम कम कर सकते हैं। दूसरा, टेक्नॉलॉजी का उपयोग करते हुए हमें हर घर, हर गली को लेकर रियल टाइम रजिस्ट्रेशन, मॉनिटरिंग की व्यवस्था बनानी होगी। कौन घर कितना पुराना है, किस गली, किस ड्रेनेज की क्या स्थिति है? हमारे बिजली, पानी जैसे इंफ्रास्ट्रक्चर का resilience कितना है? अब जैसे मैं अभी कुछ दिन पहले मीटिंग कर रहा था और मेरी मीटिंग का विषय यही था कि भई heat wave की चर्चा है तो कम से कम पिछली बार हमने देखा दो बार हमारे अस्पतालों में आग लगी और वो बहुत दर्दनाक होता है। कोई पेशेंट असहाय होता है। अब पूरे हॉस्पिटल की व्यवस्था को एक बार बारीकी से देखना, हो सकता है एक बहुत बड़ी दुर्घटना से हमें बचा सकता है। मुझे लगता है कि जितनी ज्यादा वहां की व्यवस्थाओं की सटीक जानकारी हमारे पास होगी तभी हम proactive step ले सकते हैं।

साथियों,

आजकल हम देखते हैं, बीते वर्षों में घने शहरी क्षेत्रों में आग लगने की घटनाएं बहुत बढ़ी हैं। गर्मी बढ़ती है तो कभी किसी अस्पताल में, किसी फैक्ट्री में, किसी होटल में या किसी बहुमंजिला रिहायशी इमारत में विकराल आग देखने को मिल जाती है। इससे निपटने के लिए हमें बहुत systematically चाहे वो human resource development हो, चाहे technology हो, चाहे संसाधन हो, व्यवस्था हो हमें कोऑर्डिनेटेड whole of the government approach के साथ काम करना होगा। जो घनी आबादी वाले क्षेत्र हैं, जहां तक गाड़ी से पहुंचना भी मुश्किल होता है, वहां पर आग बुझाने के लिए पहुंचना बहुत बड़ी चुनौती हो जाती है। हमें इसका समाधान खोजना होगा। High rise buildings में लगने वाली आग को बुझाने के लिए हमारे जो fire fighters साथी हैं, उनके स्किल सेट को हमें लगातार बढ़ाना होगा। हमें ये भी देखना होगा कि ये जो industrial fires लगती है, उसे बुझाने के लिए पर्याप्त संसाधन हों।

साथियों,

डिजास्टर मैनेजमेंट के इन प्रयासों के बीच, स्थानीय स्तर पर स्किल और ज़रूरी उपकरण, उन दोनों का आधुनिक होते रहना भी बहुत आवश्यक है। जैसे आजकल ऐसे अनेक उपकरण आ गए हैं, जो forest waste को biofuel में बदलते हैं। क्या हम अपनी women's self help group है उन बहनों को जोड़कर के उनको अगर ऐसे उपकरण दे दिए तो वे अपना इस जंगल का जो भी waste पड़ा है इकट्ठा करके, उसको प्रोसेस करके, उसमें से चीजें बनाकर के दे दे ताकि जंगल में आग लगने की संभावनाएं कम हो जाए। और इससे उनकी आमदनी भी बढ़ेगी और जंगलों में आग लगने की घटनाएं भी कम होंगी। इंडस्ट्री और अस्पताल जैसे संस्थान जहां आग, गैस लीक जैसे खतरे अधिक होते हैं, ये सरकार के साथ पार्टनरशिप करके, स्पेशलिस्ट लोगों की फोर्स तैयार कर सकते हैं। अपने एंबुलेंस नेटवर्क का हमें विस्तार भी करना होगा और इसे फ्यूचर रेडी भी बनाना होगा। इसको हम 5G, AI और IoT जैसी टेक्नॉलॉजी से अधिक responsive और effective कैसे बना सकते हैं, इस पर भी व्यापक चर्चा करके रोडमैप तैयार करना चाहिए। ड्रोन टेक्नॉलॉजी का राहत और बचाव में अधिक से अधिक उपयोग हम कैसे कर सकते हैं? क्या हम ऐसे गैजेट्स पर फोकस कर सकते हैं, जो हमें आपदा को लेकर अलर्ट कर सके? ऐसे पर्सनल गैजेट्स जो मलबे के नीचे दबने की स्थिति में लोकेशन की जानकारी दे सकें, व्यक्ति की स्थिति की जानकारी दे सकें? हमें इस तरह के इनोवेशन पर ज़रूर फोकस करना चाहिए। दुनिया के कई देशों में ऐसी सामाजिक संस्थाएं हैं, जो टेक्नॉलॉजी की मदद से, नई-नई व्यवस्थाएं तैयार कर रही हैं। हमें इनका भी अध्ययन करना चाहिए, वहां की Best Practices को Adopt करना चाहिए।

साथियों,

भारत आज दुनिया भर में आने वाली आपदाओं को लेकर तेज़ी से response करने के लिए कोशिश करता है और resilience infrastructure के लिए पहल भी करता है। भारत के नेतृत्व में बने Coalition for Disaster Resilient Infrastructure से दुनिया के 100 से अधिक देश आज जुड़ चुके हैं। Tradition और technology हमारी ताकत हैं। इसी ताकत से हम भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए disaster resilience से जुड़े बेहतरीन मॉडल तैयार कर सकते हैं। मुझे विश्वास है कि ये चर्चा सुझावों और समाधानों से भरपूर होगी, अनेक नई बातों के लिए हमारे लिए रास्ते खुलेंगे। मुझे पक्का विश्वास है कि इस दो दिवसीय समिट में actionable points निकलेंगे। मुझे विश्वास है कि और समय भी ठीक है बारिश के दिनों के पूर्व इस प्रकार की तैयारी और इसके बाद राज्यों में, राज्यों के बाद महानगर और नगरों में इस व्यवस्था को हम आगे बढ़ाएं, एक सिलसिला चलाए तो हो सकता है कि वर्षा के पहले ही बहुत सारी चीजों को हम एक प्रकार से पूरी व्यवस्था को sensitise कर सकते हैं जहां आवश्यकता है वहां पूर्ति भी कर सकते हैं और हम कम से कम नुकसान हो उसके लिए सज्ज हो सकते हैं। मेरी तरफ से आपके इस समिट को बहुत-बहुत शुभकामना है।

धन्यवाद।

DS/ST/DK

(रिलीज़ आईडी: 1905742) आगंतुक पटल : 401

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Bengali , Assamese , Manipuri , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय



पुणे, महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक पुरस्कार समारोह 2023 में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 01 AUG 2023 3:22PM by PIB Delhi

लोकमान्य टिळकांची, आज एकशे तीन वी पुण्यतिथी आहे।

देशाला अनेक महानायक देणाऱ्या, महाराष्ट्राच्या भूमीला,

मी कोटी कोटी वंदन करतो।

कार्यक्रम में उपस्थित आदरणीय श्री शरद पवार जी, राज्यपाल श्रीमान रमेश बैस जी, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्रीमान एकनाथ शिंदे जी, उपमुख्यमंत्री श्रीमान देवेन्द्र फडणवीस जी, उपमुख्यमंत्री श्रीमान अजीत पवार जी, ट्रस्ट के अध्यक्ष श्रीमान दीपक तिलक जी, पूर्व मुख्यमंत्री मेरे मित्र श्रीमान सुशील कुमार शिंदे जी, तिलक परिवार के सभी सम्मानित सदस्यगण एवं उपस्थित भाइयों और बहनों!

आज का ये दिन मेरे लिए बहुत अहम है। मैं यहाँ आकर जितना उत्साहित हूँ, उतना ही भावुक भी हूँ। आज हम सबके आदर्श और भारत के गौरव बाल गंगाधर तिलक जी की पुण्यतिथि है। साथ ही, आज अन्नाभाऊ साठे जी की जन्मजयंती भी है। लोकमान्य तिलक जी तो हमारे स्वतन्त्रता इतिहास के माथे के तिलक हैं। साथ ही, अन्नाभाऊ ने भी समाज सुधार के लिए जो योगदान दिया, वो अप्रतिम है, असाधारण हैं। मैं इन दोनों ही महापुरुषों के चरणों में श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

आज या महत्वाच्या दिवशी, मला पुण्याच्या या पावन भूमीवर, महाराष्ट्राच्या धर्तीवर येण्याची संधी मिळाली, हे माझे भाग्य आहे। ये पुण्य भूमि छत्रपति शिवाजी महाराज की धरती है। ये चाफेकर बंधुओं की पवित्र धरती है। इस धरती से ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई फुले की प्रेरणाएँ और आदर्श जुड़े हैं। अभी कुछ ही देर पहले मैंने दगडू सेठ मंदिर में गणपति जी का आशीर्वाद भी लिया। ये भी पुणे जिले के इतिहास का बड़ा दिलचस्प पहलू है दगडू सेठ पहले व्यक्ति थे, जो तिलक जी के आह्वान पर गणेश प्रतिमा की सार्वजनिक स्थापना में शामिल हुए थे। मैं इस धरती को प्रणाम करते हुये इन सभी महान विभूतियों को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

साथियों,

आज पुणे में आप सबके बीच मुझे जो सम्मान मिला है, ये मेरे जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव है। जो जगह, जो संस्था सीधे तिलक जी से जुड़ी रही हो, उसके द्वारा लोकमान्य तिलक नेशनल अवार्ड मिलना, मेरे लिए सौभाग्य की बात है। मैं इस सम्मान के लिए हिन्द स्वराज्य संघ का, और आप सभी का पूरी विनम्रता के साथ हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। और मैं ये भी कहना चाहूंगा, अगर ऊपर-ऊपर से थोड़ा नजर करे, तो हमारे देश में काशी और पुणे दोनों की एक विशेष पहचान है। विद्वत्ता यहां पर चिरंजीव है, अमरत्व को प्राप्त हुई है। और जो पुणे नगरी विद्वत्ता की दूसरी पहचान हो उस भूमि पे सम्मानित होना जीवन का इससे बड़ा कोई गर्व और संतोष की अनुभूति देने वाली घटना नहीं हो सकती है। लेकिन साथियों, जब कोई अवार्ड मिलता है, तो उसके साथ ही हमारी ज़िम्मेदारी भी बढ़ जाती है। आज जब उस अवार्ड से तिलक जी का नाम जुड़ा हो, तो दायित्वबोध और भी कई गुना बढ़ जाता है। मैं लोकमान्य तिलक नेशनल अवार्ड को 140 करोड़ देशवासियों के चरणों में समर्पित करता हूँ। मैं देशवासियों को ये विश्वास भी दिलाता हूँ कि उनकी सेवा में, उनकी आशाओं-अपेक्षाओं की पूर्ति में कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ूंगा। जिनके नाम में गंगाधर हो, उनके नाम पर मिले इस अवार्ड के साथ जो धनराशि मुझे दी गई है, वो भी गंगा जी को समर्पित कर रहा हूँ। मैंने पुरस्कार राशि नमामि गंगे परियोजना के लिए दान देने का निर्णय लिया है।

साथियों,

भारत की आज़ादी में लोकमान्य तिलक की भूमिका को, उनके योगदान को कुछ घटनाओं और शब्दों में नहीं समेटा जा सकता है। तिलक जी के समय और उनके बाद भी, स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़ी जो भी घटनाएँ और आंदोलन हुये, उस दौर में जो भी क्रांतिकारी और नेता हुये, तिलक जी की छाप सब पर थी, हर जगह थी। इसीलिए, खुद अंग्रेजों को भी तिलक जी को 'The father of the Indian unrest' कहना पड़ा था। तिलक जी ने भारत के स्वतन्त्रता आंदोलन की पूरी दिशा ही बदल दी थी। जब अंग्रेज कहते थे कि भारतवासी देश चलाने के लायक नहीं हैं, तब लोकमान्य तिलक ने कहा कि- 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'। अंग्रेजों ने धारणा बनाई थी कि भारत की आस्था, संस्कृति, मान्यताएं, ये सब पिछड़ेपन का प्रतीक हैं। लेकिन तिलक जी ने इसे भी गलत साबित किया। इसीलिए, भारत के जनमानस ने न केवल खुद आगे आकर तिलक जी को लोकमान्यता दी, बल्कि लोकमान्य का खिताब भी दिया। और जैसा अभी दीपक जी ने बताया स्वयं महात्मा गांधी ने उन्हें 'आधुनिक भारत का निर्माता' भी कहा। हम कल्पना कर सकते हैं कि तिलक जी का चिंतन कितना व्यापक रहा होगा, उनका विज़न कितना दूरदर्शी रहा होगा।

साथियों,

एक महान नेता वो होता है- जो एक बड़े लक्ष्य के लिए न केवल खुद को समर्पित करता है, बल्कि उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संस्थाएं और व्यवस्थाएं भी तैयार करता है। इसके लिए हमें सबको साथ लेकर आगे बढ़ना होता है, सबके विश्वास को आगे बढ़ाना होता है। लोकमान्य तिलक के जीवन में हमें ये सारी खूबियां दिखती हैं। उन्हें अंग्रेजों ने जब जेल में डाला, उन पर अत्याचार हुये। उन्होंने आज़ादी के लिए त्याग और बलिदान की पराकाष्ठा की। लेकिन साथ ही, उन्होंने टीम स्पिरिट के, सहभाग और सहयोग के अनुकरणीय उदाहरण भी पेश किए। लाला लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल के साथ उनका विश्वास, उनकी आत्मीयता, भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का स्वर्णिम अध्याय है। आज भी जब बात होती है, तो लाल-बाल-पाल, ये तीनों नाम एक त्रिशक्ति के रूप में याद किए जाते हैं। तिलक जी ने उस समय आज़ादी की आवाज़ को बुलंद करने के लिए पत्रकारिता और अखबार की अहमियत को भी समझा। अंग्रेजी में तिलक जी ने जैसा शरद राव ने कहा 'द मराठा' साप्ताहिक शुरू किया। मराठी में गोपाल गणेश अगरकर और विष्णुशास्त्री चिपलुंकर जी के साथ मिलकर उन्होंने 'केसरी' अखबार शुरू किया। 140 साल से भी ज्यादा समय से केसरी अनवरत आज भी महाराष्ट्र में छपता है, लोगों के बीच पढ़ा जाता है। ये इस बात का सबूत है कि तिलक जी ने कितनी मजबूत नींव पर संस्थाओं का निर्माण किया था।

साथियों,

संस्थाओं की तरह ही लोकमान्य तिलक ने परम्पराओं को भी पोषित किया। उन्होंने समाज को जोड़ने के लिए सार्वजनिक गणपति महोत्सव की नींव डाली। उन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज के साहस और आदर्शों की ऊर्जा से समाज को भरने के लिए शिव जयंती का आयोजन शुरू किया। ये आयोजन भारत को सांस्कृतिक सूत्र में पिरोने के अभियान भी थे, और इनमें पूर्ण स्वराज की सम्पूर्ण संकल्पना भी थी। यही भारत की समाज व्यवस्था की खासियत रही है। भारत ने हमेशा ऐसे नेतृत्व को जन्म दिया है, जिसने आज़ादी जैसे बड़े लक्ष्यों के लिए भी संघर्ष किया, और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ नई दिशा भी दिखाई। आज की युवा पीढ़ी के लिए, ये बहुत बड़ी सीख है।

भाइयों-बहनों,

लोकमान्य तिलक इस बात को भी जानते थे कि आज़ादी का आंदोलन हो या राष्ट्र निर्माण का मिशन, भविष्य की ज़िम्मेदारी हमेशा युवाओं के कंधों पर होती है। वो भारत के भविष्य के लिए शिक्षित और सक्षम युवाओं का निर्माण चाहते थे। लोकमान्य में युवाओं की प्रतिभा पहचानने की जो दिव्य दृष्टि थी, इसका एक उदाहरण हमें वीर सावरकर से जुड़े घटनाक्रम में मिलता है। उस समय सावरकर जी युवा थे। तिलक जी ने उनकी क्षमता को पहचाना। वो चाहते थे कि सावरकर बाहर जाकर अच्छी पढ़ाई करें, और वापस आकर आज़ादी के लिए काम करें। ब्रिटेन में श्यामजी कृष्ण वर्मा ऐसे ही युवाओं को अवसर देने के लिए दो स्कॉलरशिप चलाते थे- एक स्कॉलरशिप का नाम था छत्रपति शिवाजी स्कॉलरशिप और दूसरी स्कॉलरशिप का नाम था- महाराणा प्रताप स्कॉलरशिप! वीर सावरकर के लिए तिलक जी ने श्यामजी कृष्ण वर्मा से सिफ़ारिश की थी। इसका लाभ लेकर वो लंदन में बैरिस्टर बन सके। ऐसे कितने ही युवाओं को तिलक जी ने तैयार किया। पुणे में न्यू इंग्लिश स्कूल, डेक्कन एजुकेशन सोसायटी और फर्गुसन कॉलेज, जैसी संस्थानों उसकी स्थापना उनके इसी विज़न का हिस्सा है। इन संस्थाओं से ऐसे

कितने ही युवा निकले, जिन्होंने तिलक जी के मिशन को आगे बढ़ाया, राष्ट्रनिर्माण में अपनी भूमिका निभाई। व्यवस्था निर्माण से संस्था निर्माण, संस्था निर्माण से व्यक्ति निर्माण, और व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण, ये विज्ञान राष्ट्र के भविष्य के लिए रोडमैप की तरह होता है। इसी रोडमैप को आज देश प्रभावी ढंग से फॉलो कर रहा है।

साथियों,

वैसे तो तिलक जी पूरे भारत के लोकमान्य नेता हैं, लेकिन, जैसे पुणे और महाराष्ट्र के लोगों के लिए उनका एक अलग स्थान है, वैसा ही रिश्ता गुजरात के लोगों का भी उनके साथ है। मैं आज इस विशेष अवसर पर मैं उन बातों को भी याद कर रहा हूँ। स्वतन्त्रता संग्राम के समय वो करीब डेढ़ महीने अहमदाबाद साबरमती जेल में रहे थे। इसके बाद, 1916 में तिलक जी अहमदाबाद आए, और आपको जानकर के खुशी होगी कि उस समय जब अंग्रेजों के पूरी तरह जुल्म चलते थे, अहमदाबाद में तिलक जी के स्वागत में और उनको सुनने के लिए उस जमाने में 40 हजार से ज्यादा लोग उनका स्वागत करने के लिए आए थे। और खुशी की बात ये है कि उनको सुनने के लिए उस समय ऑडियंस में सरदार वल्लभभाई पटेल भी थे। उनके भाषण ने सरदार साहब के मन में एक अलग ही छाप छोड़ी।

बाद में, सरदार पटेल अहमदाबाद नगर पालिका के प्रेसिडेंट बने, municipality के प्रेसिडेंट बने। और आप देखिए उस समय के व्यक्तित्व की सोच कैसी होती थी, उन्होंने अहमदाबाद में तिलक जी की मूर्ति लगाने का फैसला किया। और सिर्फ मूर्ति लगाने भर का फैसला नहीं किया, उनके निर्णय में भी सरदार साहब की लौह पुरुष की पहचान मिलती है। सरदार साहब ने जो जगह चुनी, वो जगह थी- विक्टोरिया गार्डन! अंग्रेजों ने रानी विक्टोरिया की हीरक जयंती मनाने के लिए अमदाबाद में 1897 में विक्टोरिया गार्डन का निर्माण किया था। यानी, ब्रिटिश महारानी के नाम पर बने पार्क में उनकी छाती पर सरदार पटेल ने, इतने बड़े क्रांतिकारी लोकमान्य तिलक की मूर्ति लगाने का फैसला कर लिया। और उस समय सरदार साहब पर इसके खिलाफ कितना ही दबाव पड़ा, उन्हें रोकने की कोशिश हुई। लेकिन सरदार तो सरदार थे, सरदार ने कह दिया वो अपना पद छोड़ देना पसंद करेंगे, लेकिन मूर्ति तो वहीं पर लगेगी। और वो मूर्ति बनी और 1929 में उसका लोकार्पण महात्मा गांधी ने किया। अहमदाबाद में रहते हुए मुझे कितनी ही बार उस पवित्र स्थान पर जाने का मौका मिला है और तिलक जी की प्रतिमा के सामने सर झुकाने का अवसर मिला है। वो एक अद्भुत मूर्ति है, जिसमें तिलक जी विश्राम मुद्रा में बैठे हुए हैं। ऐसा लगता है जैसे वो स्वतंत्र भारत के उज्ज्वल भविष्य की ओर देख रहे हैं। आप कल्पना करिए, गुलामी के दौर में भी सरदार साहब ने अपने देश के सपूत के सम्मान में पूरी अंग्रेजी हुकूमत को चुनौती दे दी थी। और आज की स्थिति देखिए। अगर आज हम किसी एक सड़क का नाम भी किसी विदेशी आक्रांता की जगह बदलकर भारतीय विभूति पर रखते हैं, तो कुछ लोग उस पर हल्ला मचाने लग जाते हैं, उनकी नींद खराब हो जाती है।

साथियों,

ऐसा कितना ही कुछ है, जो हम लोकमान्य तिलक के जीवन से सीख सकते हैं। लोकमान्य तिलक गीता में निष्ठा रखने वाले व्यक्ति थे। वो गीता के कर्मयोग को जीने वाले व्यक्ति थे। अंग्रेजों ने उन्हें रोकने के लिए उन्हें भारत के दूर, पूरब में मांडले की जेल में डाल दिया। लेकिन, वहाँ भी तिलक जी ने गीता का अपना अध्ययन जारी रखा। उन्होंने देश को हर चुनौती से पार पाने के लिए 'गीता रहस्य' के जरिए कर्मयोग की सहज-समझ दी, कर्म की ताकत से परिचित करवाया।

साथियों,

बाल गंगाधर तिलक जी के व्यक्तित्व के एक और पहलू की तरफ मैं आज देश के युवा पीढ़ी का ध्यान आकर्षित करना करना चाहता हूँ। तिलक जी की एक बड़ी विशेषता थी कि वो लोगों को खुद पर विश्वास करने के बड़े आग्रही थे, और करना सिखाते थे, वो उन्हें आत्मविश्वास से भर देते थे। पिछली शताब्दी में जब लोगों के मन में ये बात बैठ गई थी कि भारत गुलामी की बेड़ियां नहीं तोड़ सकता, तिलक जी ने लोगों को आजादी का विश्वास दिया। उन्हें हमारे इतिहास पर विश्वास था। उन्हें हमारी संस्कृति पर विश्वास था। उन्हें अपने लोगों पर विश्वास था। उन्हें हमारे श्रमिकों, उद्यमियों पर विश्वास था, उन्हें भारत के सामर्थ्य पर विश्वास था। भारत की बात आते ही कहा जाता था, यहां के लोग ऐसे ही हैं, हमारा कुछ नहीं हो सकता। लेकिन तिलक जी ने हीनभावना के इस मिथक को तोड़ने का प्रयास किया, देश को उसके सामर्थ्य का विश्वास दिलाया।

साथियों,

अविश्वास के वातावरण में देश का विकास संभव नहीं होता। कल मैं देख रहा था, पुणे के ही एक सज्जन श्रीमान मनोज पोचाट जी ने मुझे एक ट्विट किया है। उन्होंने मुझे 10 साल पहले की मेरी पुणे यात्रा को याद दिलाया है। उस समय, जिस फर्गुसन कॉलेज की तिलक जी ने स्थापना की थी, उसमें मैंने तब के भारत में ट्रस्ट डेफ्रिसिट की बात की थी। अब मनोज जी ने मुझे आग्रह किया है कि मैं ट्रस्ट डेफ्रिसिट से ट्रस्ट सरप्लस तक की देश की यात्रा के बारे में बात करूँ! मैं मनोज जी का आभार व्यक्त करूँगा कि उन्होंने इस अहम विषय को उठाया है।

भाइयों-बहनों,

आज भारत में ट्रस्ट सरप्लस पॉलिसी में भी दिखाई देता है, और देशवासियों के परिश्रम में भी झलकता है! बीते 9 वर्षों में भारत के लोगों ने बड़े-बड़े बदलावों की नींव रखी, बड़े-बड़े परिवर्तन करके दिखाए। आखिर कैसे भारत दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया? ये भारत के लोग ही हैं, जिन्होंने ये कर के दिखाया। आज देश हर क्षेत्र में अपने आप पर भरोसा कर रहा है, और अपने नागरिकों पर भी भरोसा कर रहा है। कोरोना के संकटकाल में भारत ने अपने वैज्ञानिकों पर विश्वास किया और उन्होंने मेड इन इंडिया वैक्सीन बनाकर दिखाई। और पुणे ने भी उसमें बड़ी भूमिका निभाई। हम आत्मनिर्भर भारत की बात कर रहे हैं, क्योंकि हमें विश्वास है कि भारत ये कर सकता है।

हम देश के आम आदमी को बिना गारंटी का मुद्रा लोन दे रहे हैं, क्योंकि हमें उसकी ईमानदारी पर, उसकी कर्तव्यशक्ति पर विश्वास है। पहले छोटे-छोटे कामों के लिए आम लोगों को परेशान होना पड़ता था। आज ज्यादातर काम मोबाइल पर एक क्लिक पर हो रहे हैं। कागजों को अटेस्ट करने के लिए आपके अपने हस्ताक्षर पर भी आज सरकार विश्वास कर रही है। इससे देश में एक अलग माहौल बन रहा है, एक सकारात्मक वातावरण तैयार हो रहा है। और हम देख रहे हैं कि विश्वास से भरे हुए देश के लोग, देश के विकास के लिए कैसे खुद आगे बढ़कर काम कर रहे हैं। स्वच्छ भारत आंदोलन को इस जन विश्वास ने ही जन आंदोलन में बदला। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान को इस जन विश्वास ने ही जन आंदोलन में बदला। लाल किले से मेरी एक पुकार पर, की जो सक्षम हैं, उन्हें गैस सिलिंडर छोड़नी चाहिए, लाखों लोग ने गैस सिलिंडर छोड़ दी थी। कुछ समय पहले ही कई देशों का एक सर्वे हुआ था। इस सर्वे में सामने आया कि जिस देश के नागरिकों को अपनी सरकार में सबसे ज्यादा विश्वास है, उस सर्वे ने बताया उस देश का नाम भारत है। ये बदलता हुआ जन मानस, ये बढ़ता हुआ जन विश्वास, भारत के जन-जन की प्रगति का माध्यम बन रहा है।

साथियों,

आज आजादी के 75 वर्ष बाद, देश अपने अमृतकाल को कर्तव्यकाल के रूप में देख रहा है। हम देशवासी अपने-अपने स्तर से देश के सपनों और संकल्पों को ध्यान में रखकर काम कर रहे हैं। इसीलिए, आज विश्व भी भारत में भविष्य देख रहा है। हमारे प्रयास आज पूरी मानवता के लिए एक आश्वासन बन रहे हैं। मैं मानता हूँ कि लोकमान्य आज जहां भी उनकी आत्मा होगी वो हमें देख रहे हैं, हम पर अपना आशीर्वाद बरसा रहे हैं। उनके आशीर्वाद से, उनके विचारों की ताकत से हम एक सशक्त और समृद्ध भारत के अपने सपने को जरूर साकार करेंगे। मुझे विश्वास है, हिन्द स्वराज्य संघ तिलक के आदर्शों से जन-जन को जोड़ने में इसी प्रकार आगे आकर के अहम भूमिका निभाता रहेगा। मैं एक बार फिर इस सम्मान के लिए आप सभी का आभार प्रकट करता हूँ। इस धरती को प्रणाम करते हुए, इस विचार को आगे बढ़ाने में जुड़े हुए सबको प्रणाम करते हुए मैं मेरी वाणी को विराम देता हूँ। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद!

DS/ST/RK

(रिलीज आईडी: 1944636) आगंतुक पटल : 504

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Kannada , English , Urdu , Marathi , Bengali , Manipuri , Assamese , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Malayalam

